impact
www.impactmeasurement.co.in

Date : 09-Jul-2009 Edition : Delhi Page No.: 1 Page Name: Front Page Size: 696.91 sq. cm

Sector: Others Circulation: 325766 AVE: Rs.172137.97 Frequency: Daily

Publication: Hindustan - Remix Title: I am carbon copy of father!

Hindustan - Remix

मैं हूं अपने पापा की कार्बन कॉपी!

दोस्तो, तुम्हारे रिश्तेदार व साथी अकसर यह कहते होंगे कि तुम्हारी शक्ल तो तुम्हारे डैड से हूबहू मिलती है, लेकिन आदतें मम्मी जैसी हैं। यहां तक कि कई दफा उन्हें तुम्हारा चेहरा और आदतें दादा-दादी, नाना-नानी आदि से भी काफी मिलती-जुलती नजर आती होंगी। पर क्या कभी तुमने सोचा है कि आखिरकार क्यों मिलती हैं उनसे तुम्हारी आदतें या तुम हूबहू उन जैसे क्यों हो! पंकज घिल्डियाल की रिपोर्ट

दोस्तो, तुम देखते होगे कि जो कलर तुम्हारे पेरेंट्स में किसी एक को पसंद है, वही रंग तुम्हारा भी खास है। पापा को अगर खाने में नॉन वेज में कुछ पसंद है तो तुम भी उसी डिश की ओर लपकते हो। तुम्हारे दादाजी को किताबें पढ़ने का बहुत शौक है। जब देखो कोई न कोई किताब उनके हाथों में होती है। बस तुम्हें भी वहीं से आदत लग गई पढ़ने की। भले ही तुमने कॉमिक्स या कहानियों की किताबें पढ़ीं, लेकिन इससे फायदा तुम्हें अपनी स्टडी में भी मिला। दरअसल यही सब वे छोटी-छोटी बाते हैं, जिनकी वजह से हम कहते हैं कि तुम किसके जैसे हो, भले तुम्हारी शक्ल उससे न मिलती हो। इसके अलावा चलने व बात करने का तरीका। किसी दोस्त से मिलने-जुलने का तरीका व उठने-बैठने का स्टाइल। ऐसा भी होता है कि तुम्हारी किसी टीचर के पढ़ाने का स्टाइल तुम्हें बेहद पसंद होता है। अब जब कभी तुम किसी को कोई बात समझाने की कोशिश करते हो तो ठीक उसी तरह अपने हाथों को हिलाते हो।

सर्वे क्या कहते हैं...

सोशल साइंस एंड मेडिसन जर्नल में छपे एक सर्वे में महत्त्वपूर्ण बातें सामने आईं। 2,300 पेरेंट्स, जिनकी उम्र 20 से 65 और 2,700 बच्चे, जिनकी उम्र 2-18 थी, पर यह सर्वे किया गया था। सर्वे में पाया गया कि पेरेंट्स-किड्स की खानपान की आदतें बहुत कम मिलती थीं। हां छोटे बच्चों की आदतें अपने माता-पिता जैसी थीं। सर्वे में एक बात और सामने आई कि लड़कों की तुलना में लड़कियों की आदतें अपने पेरेंट्स से अधिक मेल खाती थीं। स्टडी में यह बात भी सामने आई कि बड़े बच्चों की आदतों पर घर की बजाए बाहर का अधिक प्रभाव था। इसके अलावा टीवी ने उनकी आदतों पर गहरा असर डाला और यह भी कि स्वास्थ्यवर्धक भोजन से बच्चे दूर भाग रहे हैं।

अधिकतर डॉक्टर अंकल का कहना है कि तुम्हारी आदतें और शक्ल का मिलना अनुवांशिकी भी होता है। जरूरी नहीं कि तुम्हारे अंदर तुम्हारे माता-पिता के ही गुण आएं, इसकी बजाए तुम में अपने दादा-दादी, नाना-नानी, बड़े भाई-बहन के भी गुण आ सकतें हैं। कुछ गुण तो तुम्हें अनुवाशिंकी तौर पर मिलते हैं, लेकिन कुछ तुम्हारे साथ जो लोग रहते हैं, तुम उनकी भाषा, संस्कार और तौर-तरीकों को अपना लेते हो।

अगर तुम जानना चाहते हो कि हमारी कौन-कौन सी आदतें किस-किस से मिलती हैं तो उसके लिए लो एक नोटबुक। नोटबुक में सुबह जागने से लेकर रात को सोने तक सभी एक्टीविटीज को नोट करो। उसके बाद देखो कि वे कौन-कौन लोग हैं, जिनके तुम करीब हो। घर से लेकर स्कूल तक। स्कूल में अपने खास दोस्त या फिर ट्यूशन या पार्क में मिलने वाले अन्य साथी। इससे तुम्हें अपनी अधिकतर आदतों का मेल पता लगेगा, वहीं खुद की बुरी आदतों की भी पहचान कर सकोगे।

"बच्चो, तुम्हारी आदतों में तुम्हारे माता-पिता की शक्ल से अधिक वातावरण का प्रभाव पड़ता है। तुम उन्हीं आदतों को सबसे पहले अपनाते हो, जिन्हें देख कर या खुद करने में मजा आता है। अगर किसी काम के लिए पेरेंट्स ने तारीफ कर दी तो उसे तुम अपना लेते हो और उसी को जारी रखना चाहते हो। परिवार के बाद स्कूल में दोस्त, टीवी फिल्मों का भी जोरदार असर तुम बच्चों में देखा गया है। अपने मनपसंद खिलाड़ी को कॉपी करना भी तुम्हें खूब भाता है। समाज में तुम जो भी देखते हो और वह खुद को अच्छा लगता है, वही तुम्हारी आदतों में शामिल होने लगता है।"

समीर पारिख, मनोचिकित्सक , मैक्स हैल्थ केयर

डैड एंड आई लुक अलाइक

पिछले दिनों ने राजधानी में 'डैड एंड आई लुक अलाइक कॉन्टेस्ट' आयोजित किया गया। डीएलएफ प्रोमेंडा की ओर से यह कॉन्टेस्ट रखा गया था। करीब 1 महीने चली इस प्रतियोगिता में फाइनल तक 38 प्रतियोगी पहुंचे। हालांकि 160 से अधिक आवेदन इस कॉन्टेस्ट के लिए आए थे। जीतने वालों के लिए इनाम को 3 कैटेगरीज में बांटा गया। पहला पुरस्कार हॉन्गकॉन्ग डिज्नी लैंड की सैर, दूसरा गोवा व तीसरा ईनाम मनीला की सैर था। प्रतियोगियों को जजेस के सामने परफॉर्म करना था। पहला राउंड रैम्प पर कैटवॉक करना था। दूसरा डैड व किड की ग्रुप परफॉर्मेंस था। और अंत में दोनों को अलग-अलग अपने हुनर से जजेस का दिल जीतना था। प्रश्न-उत्तर राउंड में एक दूसरे के बारे में सवाल-जवाब का भी दौर चला। कॉन्टेस्ट का मकसद ही यह पता लगाना था कि वे कौन हैं, जो एक दूसरे जैसे हैं। चाहे बात शक्ल मिलने की हो, रैम्प पर बेहतर तालमेल के साथ वॉक करने की या फिर एक जैसे शौक के साथ एक दूसरे के बारे में अधिक से अधिक जानने की। ईवेंट में एक बात साफ तौर से सामने आई कि संगीत सबकी पहली पसंद बनता जा रहा है, क्योंकि यहां परफॉर्म करने वालों में 95 फीसदी जोड़ियों ने संगीत से जजेस को प्रभावित करने की कोशिश की। बच्चों के साथ सही तालमेल बिठाने में डैड भी कहीं पीछे नहीं दिखे, चाहे बालों को बच्चों की तरह कर्ली करने की रही हो या फिर सिर मुंडवाने की।

© Hindustan - Remix www.hindustandainik.com